

बहाईयत साम्राज्यवाद की सेवक संस्था

लेखक: दारुल वहदत

नोट: ये किताब अलहसनैन इस्लामी नेटवर्क के ज़रीएे अपने पाठको के लिये टाइप कराई गई है और इस किताब मे टाइप वगैरा की गलतीयो को सही किया गया है।

Alhassanain.org/hindi

यह लेख उर्दु पत्रिका तोहिद भाग-1 मे छप चुका है।

दूसरी बार इस लेख की साज़माने -तबली ग़ात इस्लामी ने पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया।

तथा पुनः इस लेख का अनुवाद हिन्दी में प्रकाशित किया जा रहा है।

पुस्तक का नाम बहाईयत साम्राज्यवाद की सेवक संस्था

लेखक दारुल वहदत नई दिल्ली

मुद्रक : क्लासिक प्रिंटर्स- गाज़ियाबाद

दो शब्द

जनाब मुजतबा सुल्तानी साहब आज के इस विकसित युग के बहुत ही कुशल लेखक हैं। आपने विभिन्न शीर्षकों के तहत विभिन्न पुस्तकों की रचना की है। आपका सबसे बड़ा उद्देश्य यह है कि दुनिया के लोग महान शैतान अमरीका और उसके समर्थकों को पहचान लें जो कि इस्लाम के नाम ,इस्लाम के नियम तथा इस्लाम के कानून को मिट्टी में मिला देने पर तुले हुए हैं।

आपकी यह किताब पहले एक लेख के रूप में थी जो कि उर्दु पत्रिका "तौहिद" में छपा था - जब यह लेख जनता की नज़रो से गुज़रा तो आम लोगों ने इसको बहुत सराहा।

इसलिए आवश्यकता पड़ी कि इसे किताब के रूप में लाया जाए और साथ ही दुसरी भाषाओं में भी अनुवाद किया जाए। ताकि वह लोग भी इस किताब से पूर्ण लाभ उठा सकें जो कि उर्दु या फ़ारसी नहीं जानते हैं और पहचान ले कि बहाईयत का सहारा लेकर विश्व साम्राज्यवाद ने किस प्रकार इस्लाम को बर्बाद करने की ठान ली थी लेकिन धार्मिक नेताओं (उल्माए-दीन) ने किस प्रकार उनसे टक्कर ली तथा इस्लाम को जीवित किया हैं।

आशा है कि पाठ्य महोदय इस किताब से पूरा-पूरा लाभ उठाकर साम्राज्यवादी साज़िशों से होशियार रहेंगे।

संस्था

साज़माने तबलीगाते-इस्लामी

तेहरान-ईरान

प्रस्तावना

अन्तर्राष्ट्रीय साम्राज्यवाद अपने उपनिवेशों की रक्षा के लिए आज़ादी चाहने वाली जातियों से तरह तरह की लड़ाईयां लड़ता रहा है। और आज़ादी चाहने वाली जातियां भी अपने सामाजिक प्रयौगिक और मनोवैज्ञानिक साधनों की सहायता लेकर साम्राज्यवादी शक्तियों से टकराती रहती हैं। उसका तोड़ यह है कि शासक चाहते हैं कि आपस में मतभेद रखने वाली शक्तियों को एक न होने दिया जाए। राजनीति और इतिहास का अध्ययन करने के बाद ज्ञात होता है कि शक्तिशाली और दूसरों के अधिकार हड़प करने वाली विस्तारवादी शक्तियों को जड़ से उखाड़ फेंकना ही जातियों की एकता है। इसलिए वह शक्तियां इस एकता को तोड़ने का प्रयास करती रहती हैं।

शासकों की “लड़ाओं और शासन करो” की राजनीति हर जगह और हर मोड़ पर सामने आयी है। सामाजिक और ऐतिहासिक बन्धनों को तोड़ने और लोगों को आपस में लड़ाने की मुहिम जारी रखी गई है। साम्राज्यवाद ने इसके लिए अपनी शक्ति का प्रयोग किया है। और इसके रास्ते में आने वाली रूकावटों को हटा दिया है। हमलों के समय बड़ी शक्तियाँ केवल भौगोलिक इलाके और अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित केन्द्रों को ही नहीं देखती बल्कि उनकी तेज तलवारों का पहला निशाना जातियों की साँस्कृतिक सभ्यता और धार्मिक विश्वास होते हैं। जो जाति जाती किसी साँस्कृतिक विचारधारा में पैदा हुई और पली बढी हो या जिसकी सभ्यता

मजबूत हो वह अपने सभ्य विचारों से जीवन में शक्ति पाती है। वह अपने इसी सभ्य समाज के जाने माने लोगों, उनके स्वभावों और कार्य प्रणालियों को उजागर करती हैं। विस्तारवाद, जातियों को उनके सभ्य विचारों से अलग करता है। क्योंकि जब तक किसी जाति की साँस्कृतिक सभ्यता को परखा ना जाए या उसके मजबूत बन्धनों और लोगों के एकत्रित होने के स्थानों को कमजोर न किया जाए उस समय तक वह अपने समाज और समाज के धार्मिक विश्वासों को सभ्यता प्रदान करती रहेगी।

और लोगो के जीवन मे नई विचार धारा को बाकी रख सकेगी। जब तक जाति (क्रौम) में दृढ़ता (मजबूती) बनी रहती हैं। उस समय तक शासन और शासन करने वालों के अधीन होना कठिन है। विस्तारवाद के इतिहास का संक्षिप्त विवरण यह हैं कि उसका सर्व प्रथम कार्य संस्कृतिक सभ्यता और धार्मिक एकता को हानि पहुंचाने के साथ ही संगठित समाज को तोड़ना और उसकी विचार धाराओं को अलग अलग करना हैं। इसके बाद वह अपनी शासकीय सभ्यता और संस्कृतिक फैलाने के लिए , गरीब और दबी हुई जातियो की इतिहासिक सभ्यता और कला व संस्कृतिक को मिटा देता है। इसलिए कहा जा सकता है कि मानवीय आधार पर सत्य और सबसे बड़ा क्रान्तिकारी समाज इस्लामी समाज है। क्योंकि इस्लाम को जीवन प्रदान करने वाली उसकी कुशल तकनीक है। चौदह सौ साल पहले मक्के मे जन्मी सभ्यता का आज तक तानाशाही और साम्राज्यवाद से मुकाबला हो रहा है।

इस्लाम के समर्थक अल्लाह पर विश्वास, धार्मिक शिक्षा और मज़बूत इस्लामी कानून की बुनियाद पर कोशिश करते रहते हैं। ताकि हर जगह इस्लाम का बोल बाला हो जाए। और इस्तेमार , तानाशाही का समापन हो जाए। अन्तिम दो शताब्दीयों में अन्तर्राष्ट्रीय साम्राज्यवाद ने एक नया भेष बनाया। उसने अफ्रीका ,एशिया और अमेरिका जैसे देशों पर अपना अधिकार जमाया। उस समय हिम्मत और एकाग्रता से मुकाबला करने वाले केवल मुस्लमान ही थे तथा जल्द ही इस मुकाबले में धार्मिक नेताओं (उल्लमाए - दीन) का समुह आगे बढ़ा और उन्होंने पूरी एकाग्रता से भाग लिया।

उन्नीसवीं शताब्दी ईसवी के अन्त में तुर्की का उसमानी और ईरान का काचारी परिवार (भौगोलिक दृष्टि से इस्लाम की दो बड़ी शक्तियां) अपने अन्त के अन्तिम क्षणों को गिन रही थीं। उनके पूर्वजों ने इस्लामी शासन का समर्थन छोड़ दिया था इंग्लैण्ड और रूस लम्बे समय से मुसलमानों के उपजाऊ क्षेत्रों पर अधिकार करने का प्रयत्न कर रहे थे। पूर्व-मध्य देशों पर अधिकार जमाने के लिए खींचतान हो रही थी। ईरान, भारत और रूस के मध्य बहुत ही महत्वपूर्ण क्षेत्र था। इंग्लैण्ड और रूस एक से बचने और एक को बचाने के लिए इस आग में कुदना चाहते थे और दोनों साम्राज्यवादी अपने नए इतिहास को आरम्भ करने के लिए नक्शे तैयार करने में अपनी अपनी शक्तियों का प्रयोग कर रहे थे। और दूसरी तरफ इस्लामी सभ्यता के रक्षक अपने तन, मन, धन से दोनों साम्राज्यवादी

शासनों का सामना करने के लिए डटे थे। दोनों दुश्मन चाहते थे कि इस रुकावट को उखाड़ फेंकें।

नये धर्मों को जन्म देकर लोगों के अन्दर फुट डालना बड़े शासकों का चलन रहा है। यह विस्तारवाद का पुराना हथियार है। समाज के उपद्रव और लोगों के धार्मिक विश्वासों पर हमला, फुट डालने का सबसे बड़ा कारण है। धर्म से अलग केवल नाम चाहने वाले नये फ़िर्कों से मिलकर जाति (क्रौम) को नये संगठनों के नाम से धोखा देता है। इस तरह साम्राज्यवाद का उद्देश्य पुरा हो जाता है। और इसी तरह उनकी आशाओं की पूर्ति होती है। अतः ईरान में धार्मिक नेताओं को समाज से अलग करना और उनके चाल चलन को बेअसर बनाने और देश की एकता को भंग करने के लिए विस्तारवाद ने इस तरह की राजनीति अपनाई है। बहाईयत इसी रूप रेखा का एक अंग है। विस्तारवादीयों ने इस गिरोह की सहायता से अपने उद्देश्य की पूर्ति की है। तथा इस गिरोह की जन्म भूमि ईरान है। अतः इससे परिचित होने के लिए ईरान की सभ्यता और इतिहास का जानना आवश्यक है। और यह कार्य ईरानवासियों के लिए सरल है। वह इस नए जन्म में विस्तारवाद को अच्छी तरह जानते और पहचानते हैं।

पिछले दिनों साम्राज्यवादियों ने एक और चाल चलने का प्रयत्न किया है। वह यह है कि बहाईयों को संगठित किया जाए उनकी यह चाल ईरान के बाहर शुरू हुई है। इसलिए कि वहाँ के लोग अब इस गिरोह से अपरिचित हैं। उन लोगों

(बहाईयों) ने स्वतंत्रता चाहने वालों का लबादा ओढ़ रखा है। अतः साम्राज्यवाद इस लबादे के अन्दर से गुलामी का एक और जाल फेंक रहा है।

बहाईयों के साम्राज्यवादी पिट्टुओं और उनके कार्यकर्ताओं से ईरान का हर व्यक्ति परिचित है। लेकिन ईरान से बाहर के लोग उनके असली रूप से अपरिचित हैं। क्योंकि वहां के लोग इनको मेल मिलाप वाले और स्वतंत्रता के पक्षधर ही समझते हैं। यह लेख इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए है। ताकि इनके लिबादे को हटाकर उनकी असलियत को पहचानवाया जा सके।

बहाईयत का संक्षिप्त इतिहास

(1) तेरहवीं शताब्दी हिजरी के मध्य में अली मोहम्मद शीराज़ी नामक व्यक्ति का जन्म हुआ वह अपने व्यक्तित्व और शिक्षात्मक विचारों का सहारा लेते हुए इमाम मेहदी का दावेदार बन बैठा। (2) उसने अपने आप को “वासित” , “बाबे इमामे ज़माना” कहलवाना शुरू कर दिया इसलिए उसके समर्थक “बाबी” कहे जाने लगे।

अली मोहम्मद औसत दर्जे का पढ़ा लिखा व्यक्ति था अरबी , फारसी , साहित्य को जो पाठ्यक्रम प्रचलित था उसने उसकी शिक्षा प्राप्त की थी। (3) अली मोहम्मद अपने विधार्थी जीवन में धार्मिक विचार सही ना होने के कारण जादु , टोना , टोटका, भूत प्रेत, जिन और रहस्यमयी बातों पर अजीब अजीब विश्वास रखता था। जैसा कि वह ईरान के दक्षिणी बन्दरगाह “बु शहर” में तेज़ धूप के बावजूद

छत पर घंटो जादु टोने के सहारे सुर्य को अपने अधिकार मे करने के लिए अजीब अजीब हरकतें किया करता था। (4) सीधे साधे लोगों को दुआ तावीज़ और गंडों के सहारे अपना बनाता रहा और लोग धोखा खाते रहे। (5) पहले तो उसने अपने को इमामे ज़माना का जानशीन होने का दावा किया। (6) और कुछ ही दिनों बाद खुद ही इमामे ज़माना बन बैठा (7) फिर नबुवत और नया दीन लाने का एलान कर दिया। (8) अंत मे एक समय ऐसा भी आया कि वह अपने भाषण और लैखों मे स्वयं खुदा होने का दावा किया करता था। (9) शीराज़ के पढ़े लिखे लोगो ने जब अली मोहम्मद को घेरा तो काफी वाद विवाद के बाद उसने मस्जिद मे जाकर जनता के सामने अपने किये हुए कर्मों की क्षमा याचना की। (10)दुसरी बार उसने जब अपने मिशन का आरम्भ किया तो उस समय तबरेज़ के लोगों ने पकड़ा। इस बार वह बहुत रोया पीटा और माफीनामा भी लिखकर राजा के पास भेजा। (11) किन्तु तबरेज़ के धार्मिक नेताओं ने उसकी क्षमा याचना को स्वीकार नही किया लेकिन उसके पागल पन के कारण उसे मौत के हुक्म से मुक्त रखा। (12) परन्तु बाबियों के हंगामे और उग्रवाद से मजबुर होकर अमीर कबीर (सदरे-आज़म) ने इस बुनियाद पर मृत्यु दण्ड का आदेश दे दिया कि जब तक बाब जीवित है। उसके उसके पक्षधर हंगामे करने से नही रुकेगें। (13) इसफ़हान का शासक “रूसी असअसल” , अरमानी मनोचहर खान बड़ा ज़ालिम था। उसको बाब और बाबियों से बड़ा लगाव था। रूस और ब्रिटिश दुतावासों के इतिहास से ज्ञात होता है कि न

केवल मनुचहर को बाबियों से लगाव था बल्कि वह ज़बानी समर्थन देता और अपनी शक्तियों से उनकी रक्षा किया करता था।(15) उसने उसके मृत्युदण्ड के आदेश के बारे में हस्तक्षेप भी किया था। लेकिन अमीर कबीर ने अपना आदेश वापस नहीं लिया। क़ज़वीन , माजिन्दारन यज़्द , तबरेज़, ज़न्जान में बाबियों ने अली मोहम्मद को छुड़ाने के लिए काफी उपद्रव किया। जिनके कारण अत्याधिक जानी और माली नुकसान हुए। और बहुत से क्षेत्रों में अनुशासन हीनता फैल गई। यह गड़बड़ दूतावासों के लिए विशेष रुचि का कारण बनी। जो देश अपने विस्तारवादी प्रोग्राम बनाए बैठे थे उन्हें अपनी इच्छाओं की पूर्ति का अवसर मिला। इसलिए इंग्लैण्ड के राजदूत ने अपनी सरकार के पास एक पत्र भेजा। जिसके कुछ अंश इस प्रकार हैं।

“इस प्रचारक, (अली मोहम्मद शीराज़ी) के सिध्दान्त और धार्मिक विश्वास अपने अन्दर कोई नई बात नहीं रखते हैं। और अगर इनके पक्षधरों को इसी हालत में छोड़ दिया जाए और कोई नोटिस न लिया जाए तो यह लोग अपनी मौत आप मर जाएँगे। किन्तु यह कैद और पाबंदिया ऐसी हैं जो इन्हें मरने से बचा लेगी” ।

बाबियों के हंगामें एक खोखले , निराधार गिरोह को सामाजिक अस्तित्व देने का कारण बने। और सीधे - साधे, आलसी लोगों के लिए शक्ति ग्रहण का रास्ता बने।

अली मोहम्मद शीराजी के फाँसी पाने के बाद मिर्जा याहिया नूरी (सुबहे - अज़ल) ने जानशीनी के दस्तावेज पर हस्ताक्षर करके बाबियों के नेता बनने का

भार संभाल लिया। यहिया अपने सौतेले भाईयों के साथ दो साल तक ईरान के विभिन्न क्षेत्रों में छुपा-छुपा घूमता रहा। इस अन्तराल में तीन बहाई, राजाओं को कत्ल करने का मनसूबा (योजना) बनाने के जुर्म में तथा कुछ अन्य जुर्मों में गिरफ्तार और कत्ल किये गये। शासन ने उनके बढ़ते हुए प्रभाव को समाप्त करने के लिए चुन चुन कर फासियाँ दी, खतरनाक माहौल देखा तो मिर्जा यहिया साधुओं का भेष बदलकर बगदाद चला गया। और मिर्जा हुसैन अली यहिया के सौतेले भाई ने रूसी दूतावास में पनाह ली। रूसी राजदूत ने उसका भरपूर समर्थन किया। और सदरे-आज़म ईरान को एक पत्र लिखा। जिसमें हुसैन अली की जान और माल की रक्षा का आग्रह किया गया था। लेकिन हुसैन अली कैद किया गया जिसके उत्तर में रूसी शासन ने ईरान के शासक को धमकी पूर्ण पत्र लिखा। अंततः राजदूत ने बहुत प्रयास करने के बाद उसे आजाद करा लिया। ईरान की बाब से खुल्लमखुल्ला दुश्मनी और रूस से खुल्लमखुल्ला समर्थन पाने के बाद उन लोगों को ईरान में ठिकाना नहीं मिला तो रूस के राजदूत ने अत्यधिक प्रयत्न कर के हुसैन अली को बगदाद भेजने का निर्णय किया। उसके बाद बाबियों की गिरफ्तारी और कत्लेआम का काम शुरू हुआ। उसी हाल में हुसैन अली को रूसी और ईरानी संरक्षकों के साथ ईरान से बगदाद पहुँचा दिया गया।

रूस और बहाईयत से सम्बंधित महत्त्वपूर्ण बात यह है कि रूसी शासन ने अपने दक्षिणी नगर “इश्काबाद” में बाबियों को धार्मिक स्थल बनाने की आज्ञा दे दी।

ताकि रूसी मुसलमानों से मुकाबला हो सके। “इश्काबाद” में बहाईयों की पार्टी बनी और शासन ने उनके प्रचार और प्रसार के लिए पूरा समर्थन दिया। जिसके उत्तर में हुसैन अली ने रूस के राजा ज़ार को एक तख्ती भेंट की। जिसमें राजा की प्रशंसा के साथ साथ राजा के प्रति अपनी सेवा और धन्यवाद प्रकट किया था।

बगदाद के शासन और रूस के शासन के प्रयत्न से बाबियों को उसमानी शासन का वफादार मान लिया गया। इसके बाद शासन के लिए खींचतानी लड़ाई और कत्ल की नौबत आ पहुँची। हर एक के पास मुहम्मद अली द्वारा हस्ताक्षरित पत्र मौजूद थे। और हर एक जानशीनी के लिए दावा कर रहा था। उग्रवाद , चोरी , डकैती , बाबियों का काम बन चुका था। इसलिए लोग बाबियों से नाराज़ थे। इसके अतिरिक्त कट्टर धार्मिक नेताओं (उल्माए-दीन) की अध्यक्षता में मुसलमान भी उनके मुकाबले के लिए आ गये थे। ईरानी शासन भी लगातार सरकारी और गैर सरकारी तौर पर उसमानी शासन से रोष प्रकट कर रहा था। इसका परिणाम यह हुआ कि बाबी बगदाद से इस्तम्बूल और कुछ महीने के बाद अदिरना स्थानतरित कर दिए गये। मिर्जा हुसैन ने यहां पूरी तरह से बाब की जानशीनी का दावा करके अपने सौतेले भाई मिर्जा याहिया से टक्कर ली। इसके बाद दोनो पक्षों ने जाली कागज़ात और धोखाधड़ी से गुप बना लिया। आपस में झगड़े बढ़ते गए। हुसैन अली और याहिया ने किसी न किसी विपक्षी तुर्की दुतावास से सम्बन्धित होकर अपने बचाव की तरकीब निकाली। किन्तु यह बात शासन के नहीं भाई। और

निर्णय किया की मिर्जा याहिया के समर्थकों को “किबरस” और मिर्जा हुसैन अली को उसके समर्थकों के साथ फिलिस्तीन भेज दिया जाए। याहिया के समर्थक विदेशी सहायता समाप्त होने के बाद धीरे धीरे उसका साथ छोड़ने लगे। हुसैन अली बहाउल्ला के नाम से स्वयं एक नये धर्म का नेता बन बैठा हुसैन अली ने बाब की तरह कदम आगे बढ़ाया पहली बात तो यह कही कि अली मोहम्मद का कोई स्थान नहीं, असली तों मैं हूँ। बाब हमारे आने का समाचार लेकर आए थे। अब बाबियत का अन्त हो चुका और बहाईयत ने जन्म पाया हैं। बहाउल्ला ने पैगम्बरी के दावे के साथ साथ खुदाई का दावा भी किया। लेकिन अक्का (फिलिस्तीन) का माहौल सही न देखकर अपने को मुसलमान भी कहता रहा। बीस वर्ष से अधिक समय तक उसने माहौल ठीक बनाने और बाबियों मे अपना व्यक्तित्व और प्रभाव जमाने के प्रयत्न के साथ साथ और भी काम किये। महत्वपूर्ण बात यह है कि रुसी शासन यहां भी उसका भरपूर समर्थन करता रहा और प्रति माह वेतन भी देता रहा। और लगातर उसका दबाव बना हुआ था। इसलिए बहाइयों ने एक बार फिर ईरान का रास्ता पकड़ा और वापसी की तरकीब सोची। ईरान के राजा को स्वयं हुसैन अली ने क्षमा के लिए सिफारिश लिखी। जिसमें ईरान शासन ने इस दरखास्त पर कोई नोटिस नहीं लिया। अब (अक्का) फिलिस्तीन के बहाई पुरी तरह तुर्की के शासन से सम्बन्ध बनाने पर नज़र जमा बैठे। और उस्मानी सुल्तान के दरबार से रो-धो कर क्षमा याचना करते रहे।

हुसैन अली बहा की मृत्यु के बाद उसका पुत्र मिर्जा अब्बास आफ़न्दी बहाईयों का नेता बना। और उसने अब्दुल बहा के नाम से अपने को प्रसिध्द किया। अब्बास आफ़न्दी भी तुर्की के राजा को खुश करने के लिए हर तरह से चापलूसी करने के साथ साथ मुस्लमान होने का दावा भी करता रहा। और साथ ही खुले आम उस्मानी शासन का समर्थन भी करता रहा।

रुस में कम्युनिस्ट क्रान्ति आने से माहौल बदला और नए शासन ने बहाईयों को रुसी शासक “जार” का मित्र माना तथा अपने व्यय की अधिकता के कारण उनकी आर्थिक सहायता में बेहद कमी कर दी। अब्दुल बहा ने इंग्लैण्ड के साथ सम्बन्ध दोबारा कायम करने की ठान ली। और वह इस विषय में जासूसी करने लगा। प्रथम विश्व युद्ध और फिलिस्तीन में अंग्रेज़ी सेना का आगमन होते समय अब्दुल बहा की अध्यक्षता में बहाईयों ने अंग्रेजों की सहायता की। तुर्की के शासन ने अब्बास आफ़न्दी के रहस्य मय कार्यों का पता पाते ही एक नया क़दम उठाया। फिलिस्तीन के कमान्डर इन -चीफ ने जासूसी के आरोप में उसके क़त्ल का निर्णय दिया। लेकिन इंग्लैण्ड की सूचना देने वाली एजेन्सी ने तेज़ी दिखायी। उसकी सूचना पर इंग्लैण्ड के विदेश मंत्री लार्ड बिलफर ने जनरल ऐल्न बी को फिलिस्तीन तार भेजा जिसमें अब्दुल बहा की जान बचाना और बहाईयो की सुरक्षा का आदेश था।

इंग्लैण्ड की ओर से सेवा की स्वीकृति

युद्ध समाप्त होने के बाद इंग्लैण्ड की सरकार ने अब्दुल बहा को उसकी जासूसी सेवा के एक शानदार समारोह में उसका सम्मान करते हुए 'नाइटहेड' पुरुस्कार और 'सर' का खिताब दिया। इसके उत्तर में अब्दुल बहा ने इंग्लैण्ड सरकार की वफादारी और प्रतिष्ठा में एक तख्ती भेंट की।

अब्दुल बहा की मृत्यु पर इंग्लैण्ड के दुतावास और सांस्कृतिकभवन ने बहाईयों से सहानुभूति प्रकट की तथा सरकारी तौर पर तार और पत्र भेजा। इंग्लैण्ड के उपनिवेश मंत्री सर वेनसन चर्चिल ने जनरल एलन बी . को आदेश दिया कि इंग्लैण्ड के राजा की ओर से बहाईयों को उनके नेता की मृत्यु पर शोक प्रकट करें। इंग्लैण्ड के चीफ कमिश्नर सर हरबर्ट समोईल और सर इनाल्ड हरबर्ट मध्य-पूर्व एशिया के राजनीतिक एजेन्ट और दूसरे बड़े-बड़े पदाधिकारियों को अब्दुल बहा के जनाजे में सम्मिलित होने का आदेश दिया। यह बात स्मरणीय है कि हरबर्ट समोईल ही वह व्यक्ति है जिसने ईसराईली शासन की नींव रखी। अब्दुल बहा के बाद उसका समलैंगिक कुकर्मि, नाती, शौकी, आफन्दी वसीयत के अनुसार बहाईयों का नेता बना। और अब बहाई संगठन इंग्लैण्ड के विस्तारवाद का एक राजनैतिक और खतरनाक अड्डा है। शौकी ने इंग्लैण्ड में शिक्षा प्राप्त की और अंग्रेजों की सलाह के अनुसार इंग्लैण्ड के "बहाईयों की सभा" नामी संगठन की नींव डाली।

पूरे इंग्लैण्ड, स्काट लैण्ड, आयर लैण्ड और उत्तरी दक्षिणी वेल्ज़ में इस संगठन का जाल फैलाया जा चुका है।

युगान्डा पर अंग्रेजी आधिपत्य का दौर बहाईयों के लिए लाभदायक रहा। उन लोगों ने जासूसी के अड्डों के सहारे “कम्पाला” में एक धार्मिक स्थल बना लिया। शौकी आफन्दी ने विस्तारवादी गिरोहों से सम्बन्ध बढ़ाए। अमरीका और दूसरी दुनिया में संगठन की स्थापना करना शुरू किया। वास्तविकता यह है कि फ्रीमेसन संगठनों ने नीचे आकर बहाईयों का रूप धारण कर लिया है। और दुनिया के सूचना विभागों विशेषकर सी-आई-ए ने अपनी उग्रवादी योजनाओं में बहाईयों की सहायता ली है। शौकी आफन्दी के कोई पुत्र नहीं था , उसने नौ व्यक्तियों को सम्मिलित करके एक काउंसिल की स्थापना की। जिसे “न्यायालय” कहा जाने लगा यह काउंसिल और उसके सदस्य दुनिया के बहाईयों की समस्याओं का समाधान करने के लिए आधारभूत सदस्य थे। शौकी आफन्दी की मृत्यु के पश्चात् उसकी वसीयत के अनुसार “चार्ल्स मेसन रेमी” को न्यायालय का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। चार्ल्स सी.आई.ए. का अमरीकी एजेन्ट था। उसकी अध्यक्षता पर बहाईयों ने आपत्ति प्रकट की। विशेषकर इंग्लैण्ड समर्थक गुट ने अच्छा खासा विरोध किया। अब बहाई विभिन्न फिर्कों में बट चुके थे। और आजकल बहाई साम्राज्यवाद का कार्यकर्ता संगठन है। अब बहाई पूरी दुनिया में अन्तराष्ट्रीय शासन का सपना देख रहे हैं।

साम्राज्यवादी शक्तियों से बहाईयों का सम्बन्ध

(बहाईयत और रूस) बहाईयत के आरम्भ से रूसी शासन गुप्त और खुले तौर पर इस संगठन का समर्थन करता रहा है। दक्षिणी क्षेत्रों में अपना विस्तार तथा अधिपत्य जमाने के लिए हर रोज नई नई योजनाएँ बनाते थे। उनमें ईरानी सरकार से संघर्ष भी सम्मिलित था। बहाई आन्दोलन का समर्थन इस सिलसिले की महत्त्वपूर्ण कड़ी थी। हुसैन अली का रूसी दूतावास में पनाह लेना, बाबियों की समस्याओं में रूसी सरकार का सम्मिलित होना, हुसैन अली की जान का संरक्षण, और पूर्ण सुरक्षा के साथ इराक भेजना, प्रतिमाह वेतन की अदाएगी, रूसी शासक ज़ार का आशीर्वाद और समर्थन में तखतियों का लिखना, प्रार्थना पत्रों का भेजना यह सब ऐसी वास्तविकताएँ हैं। कि इन्हें बहाई आज भी स्वीकार करते हैं।

बहाईयत और उसमानी शासक

इसलामी खिलाफत की दावेदार उसमानी शाहनशाहियत मुसलमान आबादी के बहुत बड़े क्षेत्र पर शासन करती थी। राजनीति और धार्मिक गुटों के अन्दर फूट डालने के अतिरिक्त साम्राज्यवादियों की साजिश के हाथों उसके ईरान से खराब सम्बन्ध, उलझी हुई समस्याएँ और युद्ध जैसा माहौल रहता था। हर सम्भव क्षण में ईरान पर चोट लगाते और उससे पूर्ण रूप से लाभ उठाते थे। इन समस्याओं को

देखते हुए उसमानी शासक ने बाबियों को अपने यहाँ पनाह देने में स्वयं फायदा समझा। बाबी गुट को इरानी शासन के विरुद्ध प्रयोग करना सम्भव होने के साथ साथ बाधा डालने का यह लाभ भी था कि ईरानी मुसलमानों के धार्मिक दलों में फूट पड़ जाए। इसलिए बगदाद के गर्वनर ने बाबियों के लिए राष्ट्रीयता प्रदान की। और जितनी भी सहायता उसके बस में थी करता रहा। इसके उत्तर में हुसैन अली ने अपने विचार प्रकट करते हुए उनकी प्रशंसा की।

बहाईयत और ब्रिटिश सरकार

उसमानी शासन बाबियों को शरण देकर कुछ लोगो के हाथो कठिनाई मे पड़ गया। सबसे बड़ी बात यह है कि उन लोगों के विरोधी सरकार के दुतावासों से सम्बन्ध थे। तुर्की की सरकार ने खतरा देखते ही बाबियों का समर्थन छोड़ दिया। और लाल क्रान्ति मे आए हुए रुस ने भी अपने सम्बन्ध तोड़ लिये- दूसरी ओर सबसे पुराना इंग्लैण्ड का साम्राज्य अपने विस्तारवादी साधनों जैसे जासूसी और राजदूतों के सहारे बाबियों कि समस्याओ को महत्व दे रहा था। और मौका आने पर उनकी सहायता भी करता था। अंग्रेज़ ताक मे थे कि समय मिलते ही जाल फेंकें। रुस और उसमानी सरकार के सम्बन्ध तोड़ने के बाद मैदान खाली हो गया। उधर बाबी भी किसी शक्तिशाली की शरण ढूँढ रहे थे। दोनो की एक दुसरे को आवश्यकता थी। इसलिए अपने पुराने सम्बन्ध को बढ़ाना आरम्भ किया। और

बहाई ब्रिटिश सरकार के विश्वसनीय हो गए। फ्रीमेशनी और अन्तर्राष्ट्रीय साम्राज्यवाद के केन्द्रीय कार्यों का सहारा लेते हुए फिलिस्तीन में सेवा कार्यों हेतु आगे बढ़े। इंग्लैण्ड ने इसके उत्तर में उन्हें "सर" का खिताब दिया। इंग्लैण्ड की सरकार ने उपनिवेश मंत्रालय और धार्मिक कार्यों के उद्देश्य के अनुसार उससे कार्य किए। और बहाईयों ने अंग्रेजों के पूर्ण या अर्ध सुरक्षित क्षेत्रों में विदेश मंत्रालय, जासूसी के अड्डे तथा विस्तारवादी उद्देश्यों की प्रगति में सहायता दिया। विशेषकर महाद्वीप अफ्रीका में उन लोगों ने बढ़ चढ़ कर सेवा की। और भरपूर लाभ उठाया। खूंखार और अत्याचारी ब्रिटिश शासन मज़लूम और बेचारी जनता की जागरूकता , आज़ादी के आन्दोलन, और एकता, (विशेषकर इस्लाम की ओर अफ्रीका वालों का झुकाव)को एक बड़ा खतरा समझ रहा था। इस तूफान को रोकने के लिए बहाईयत इस्लाम के नाम पर बहुत लाभदायक थी। इन सम्बन्धों के सबूत में बहाई संगठनों की केन्द्रीय कमेटी की ब्रिटिश देशों में स्थापना करने के अतिरिक्त बहाईयों और उनके नेताओं की वह भावनाएँ हैं जो उन्होंने भयावह ब्रिटिश शासन के पदाधिकारियों को लिखी थीं।

बहाईयत और यहूदी आन्दोलन

प्रथम विश्व युद्ध के दिल दहला देने वाले परिणामों में वह कारनामा भी है जो इंग्लैण्ड के विदेश मंत्री लार्ड बिलफोर्ड और यहूदी पूंजीपति लार्ड रिचर्ड में हुआ था।

जिसके कारण फिलिस्तीन में यहूदियों का नए सिरे से उपनिवेश (आबादकारी) और कौमी बैठक की स्थापना हुई। फिलिस्तीन की पवित्र भूमि पर यहूदियों को बसाया जाना ब्रिटिश शासन के चेहरे पर बदनुमा धब्बा है। और अमरीका के अपराधों में इस बड़े अपराध ने उसे अधिक अपमानित किया है। फिलिस्तीन पर कंट्रोल संभालने के बाद ब्रिटेन मध्य पूर्व क्षेत्रों पर अपने कदम जमाये रखने और मुस्लिम क्षेत्रों पर सत्ता करने का सपना देख रहा था। उधर मुसलमानों में जागरूकता और आजादी की लहर उठ रही थी। मध्य-पूर्व में साम्राजियत को खतरे का सामना दिखाई दिया तो उसने सोचा कि इस क्षेत्र में एक चौकी की स्थापना करना आवश्यक है। सर हरबर्ट समोईल यहूदी पूँजीपति को इस काम के वास्ते चुना गया। यह राजनैतिक एजेन्ट यहूदियों की फिलिस्तीन वापसी की योजना बनाने के लिए आया था तथा बहाईयों का मित्र और सहायक था। जो अब्दुल बहा के जनाजे में शामिल भी हुआ था। फिलिस्तीन पर ब्रिटिश शासन के लिए बहाई एक होकर सहायता कर रहे थे। यहूदी आन्दोलन कर्ताओं के सहायक और तरह तरह की समस्याओं में उनके साथ थे। इसीलिए शासन की स्थापना के बाद फिलिस्तीन में यहूदी हिस्सादारी का दावा करने और उसे पवित्र भूमि कहने लगे। फिलिस्तीन में उन्होंने अपने नेताओं को दफन किया और मुसलमानों से दुश्मनी ठान ली। बहाईयों ने फिलिस्तीन में यहूदी सरकार की स्थापना का स्वागत किया। राष्ट्र संघ ने फिलिस्तीन की समस्या का निरीक्षण करने के लिए जो कमीशन भेजा था। बहाईयों

ने इस कमीशन को यहूदी मांग के समर्थन में एक मेमोरण्डम लिखा। जो कि फिलिस्तीन पर अधिकार करने वाली इसराइली सरकार की स्थापना और उसकी मजबूती के लिए कोशिश कर रहा है। वह बहुत ढिंढाई से एक कौम के अधिकारों को कुचलने और साम्राज्यवाद के फैलाव के खुदाई वचन की पूर्ति का नाम देते हैं। इस सेवा सत्कार के उत्तर में इसराइली शासन ने सरकारी तौर पर उनके गिरोही विचारों को कानूनी धर्म स्वीकार किया है। और बहाईयों ने पूरी छूट के साथ (अक्का) फ़िलिस्तीन में विश्व बहाई केन्द्र स्थापित कर लिया। जिसे यहूदी सरकार सहायता देती है। इसके अतिरिक्त अमरीका में भी उनका एक केन्द्र यहूदी सहायता से बना है। और वह केन्द्र जो कि खूंखार साम्राज्यवाद के लाभों की पूर्ण और विकसित करने में लगा हुआ है। बहाईयों का जासूसी और हानिकारक कार्य बढ़ते बढ़ते अरब भूमि तक फैल गया। इसराइल और अरब के युद्ध में उसकी कार्य प्रणाली सबने देख ली।

ईरान में बहाईयत और यहूदी आन्दोलन इस्लामी आन्दोलन

क्रान्ति से पूर्व

पहलवी शासन में ईरान मध्य-पूर्व क्षेत्र का एक सीमान्त दुर्ग था। और विस्तारवादियों के लाभों का संरक्षण उसके ज़िम्मे था। इसलिए बहाई और यहूदी

संयुक्त रूप से शाह के साथ थे। बहाई मुहम्मद रज़ा पहलवी की रिश्त और पार्टी बाजी के नाम पर अपना समर्थक बनाकर सरकार में अपनी पहुँच बना बैठे। और फिर धीरे धीरे उत्तरदायी अधिकारियों को अपना बनाकर पहलवी शासन के भरोसेमंद कार्यकर्ता बन बैठे। यहूदी समर्थक होवैदा शासन के 15 वर्षों में बहुत से यहूदी मंत्री और संसद सदस्य हो गए। उन लोगों ने कारखाने बनवाये, बैंक और औद्योगिक फर्मों के मालिक बने।

इस अवधि के अनेक राजनैतिक नेता बहाई थे। जैसे हज़ ब्रिजवानी मशहूर पूंजीपति , जनरल आलाई, प्रोफेसर हकीम और शाही विशेष डाक्टर के नाम प्रसिद्ध हैं। इसलिए यह कहा जा सकता है कि शाह के दौर में फ्रीमेशन के बाद जिस दल ने ईरान की राजनीति और अर्थव्यवस्था में उँचा स्थान पा लिया था, वह बहाई ही थे। वह 25 वर्षों तक पहलवी शासन द्वारा अत्याचार करवाते रहे। यही वे थे जो इस्लाम और मुस्लिमानों को समाप्त कर देना चाहते थे।

बहाईयत और अमरीका

दूसरे विश्व युद्ध के बाद नवनिर्मित-विस्तार वादी शक्ति अमरीका वास्तव में ब्रिटिश साम्राज्य और यहूदियों को बढ़ावा देने में सहायक सिद्ध हुई। खूँखार ब्रिटेन ने बहुत से स्थानों पर कमज़ोर जातियों को दबाने के लिए जिस अन्तर्राष्ट्रीय यहूदी आन्दोलन की सहायता की थी। वह उनका शिष्य है। और विश्व में उग्रवाद और खूँखारी करने का ठेका आजकल उसी को दे रखा है। इस समय बड़ी शक्ति होने के दो दावेदार हैं। अमरीका और इसराईल। दुनिया भर की पूंजी अमरीका में, और अमरीका की सारी पूंजी यहूदियों के अधिकार में हैं। यही लोग फ्री मेशनी संस्थाओं के बड़े बड़े पदों पर नियुक्त हैं। अन्तर्राष्ट्रीय साम्राज्यवाद का नमूना अमरीका है। कठिनाईयों का सामना करने वाले गरीब मजदूरों के विरुद्ध योजनाएं अमरीका से बनकर आती हैं। और इन योजनाओं को कार्य रूप देने में इसराईल आगे है। यह बात भी कही जा सकती है कि बहाईयों ने भी साम्राज्यवाद से अपना समर्थन प्रकट करने में एक क्षण भी बर्बाद न होने दिया और अपनी इस सरकार सेवा को लोगों के सामने प्रकट भी कर चुके हैं।

अमरीका के राष्ट्रपति रीगन ने कानूनी तौर पर एक बयान में बहाईयों का समर्थन करते हुए ईरान में बहाईयत की हालत पर मगरमच्छ के आँसू बहाए और उनसे हमदर्दी प्रकट की। ईरानी क्रान्ति के धार्मिक नेता आयतुल्ला खुमैनी ने 28 मई 1983 के एक बयान में कहा-

“बहाईयो के अमरीकी जासूस होने पर अगर हमारे पास कोई सबूत न भी होता तो अमरीकी राष्ट्रपति रीगन का बहाईयों के प्रति समर्थन हमारे लिए पूरी दलील है।”

यह सबूत बताते हैं कि बहाईयत विस्तारवाद की कार्य प्रणाली है। और साथ ही बहाईयत अमेरीका की विश्वसनीय सेना तथा संस्था है। अतः जहां जहां साम्राज्यवाद से युद्ध जारी है वहां वहां बहाईयों से निपटना जरूरी है।

कुछ महत्व पूर्ण बातें बहाई कार्यकर्ताओं के विस्तारवादी होने के अतिरिक्त बहाई धार्मिक विश्वासों का फैलाव स्वयं साम्राज्य के लिए लाभदायक है। अगर यह गिरोह अपने ग़लत विश्वासों को किसी भी समाज में फैला दें तो साम्राज्यवादियों के लिए उस समाज को अपनी संस्कृति में ढाल देना आसान हो जाता है। क्योंकि माहौल बना बनाया मिलता है। इसलिए वह क़ानूनी तौर पर लोगों को अपना अधीन बना लेते हैं। बीसवीं शताब्दी में विस्तारवाद नये नये हथियारों से लैस होकर निकला। न्यू कालोनिजम को मालूम है। कि धार्मिक विश्वास समाज को बनाने और मजबूत करने में बहुत ही असरदार होते हैं क्योंकि लोगों कि जिन्दगी से धार्मिक विश्वासों का अलग होना असम्भव है। इसलिए साम्राज्यवादी इस विचार में रहते हैं कि धार्मिक विश्वासों और उनके फैलाव के सिध्दान्तों को जड़ से हिला दें। फिर साम्राज्य के अन्दर फैले हुए असर को बेकार कर दें। विशेषतः इस्लामी विचारधारा और धार्मिक विश्वास दुनिया के गरीबों को शक्ति और आज़ादी प्रदान

करते हैं। और अत्याचार से टक्कर लेने के लिए ताकत और हिम्मत प्रदान करती है। साम्राज्यवादीयों के विचार में इसका तोड़ आपस में फूट डालना और धार्मिक विश्वासों को कम करना है। जिससे क्रान्ति फैलाने वाले व्यक्तियों की सक्षमता समाप्त हो जाती है।

धर्म के प्रति विश्वासों को समाप्त कर नए विश्वासों को प्रचलित करना

मेहदवियत या एक मुक्ति देने वाली मानवता का विश्वास अर्थात् खुदा की ओर से एक शक्ति का आगमन होगा। जो लोगों को अच्छाईयों की ओर प्रेरित करेगा। खुदा की सहायता से लोगों को न्याय दिया जाएगा और संसार में एक न्यायपूर्ण शासन स्थापित होगा। यह धार्मिक विश्वास आकाश से सम्बन्धित सभी दीन और मज़हब में पाया जाता है। यह अवश्य है कि इस्लाम में यह धार्मिक विश्वास भरपूर तरीके से पाया जाता है। अतः न्याय पसन्द और आज़ादी दिलाने वाले दर्शन शास्त्री मनुष्यों ने कमज़ोर और गरीब जनता को सदा अत्याचार से टक्कर लेने पर उभारा है। और उनकी सफलता का विश्वास दिलाया है। और ऐसे ही विश्वासों को भंग करके धर्म पर हमला भी किया जाता है। पूंजी पति और अपनी शक्ति से डराने वाले धोखेबाज़ इस धार्मिक विश्वास का मज़ाक उड़ाते हैं। और इन विश्वासों से

इन्कार करते हैं क्योंकि यह धार्मिक विश्वास विस्तारवाद की राह में सबसे बड़ी रुकावट है। इसलिए फूट ड़ालने वाले गुट फसाद और दंगा भड़काने वाली बातें करते हैं। और नए विश्वासों की सहायता से असली धार्मिक विश्वासों को कमज़ोर करते रहते हैं। उनका विचार है कि अगर एक व्यक्ति मैहदी मौऊद बन बैठे तो कोई खराबी नहीं होगी। ज़ालिम अपने स्थान पर मज़बूत ही रहेगा। कोई उसका विरोधी नहीं होगा। बल्कि “मैहदी” साहब भी उनसे टक्कर लेने के बजाए उनकी सहायता करते और आशीर्वाद देने में भी संकोच न करते। इसके नतीजों में कमज़ोर और बेचारी जनता धार्मिक विश्वासों से बद दिल होती। उनकी आशाओं पर पानी फिर जाता विरोध करने का उत्साह ठंडा पड़ जाता और वह हिम्मत हार जाते; विस्तारवाद को एक नयी शक्ति मिलती। मैहदी साजी की यह चाल विस्तारवाद के लिए लाभदायक सिद्ध हुई। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के मध्य मैहदियों का आगमन आरम्भ हो गया। किन्तु ब्रिटिश उपनिवेश(नौ आबादियात) के अन्तर्गत सोने की चिड़िया भारत, या उसके आस पास वाले देशों में और उत्तरी अफ्रीका में भी मेहदवियत के दावेदारों का समर्थन करने वालों में बहाई सबसे प्रसिद्ध और शक्तिशाली गुट था। इसलिए बहाई अपने झूठे और बे दलील दावों के साथ साथ कमज़ोर मज़दूर जातियों के लिए सबसे खतरनाक गुट माना जाता है। यह गिरोह विस्तारवाद के लिए रास्ता खोलने और साम्राज्यवाद की सेनाओं के लिए मोर्चे बनाने का कार्य ग्रहण किये हुए है।

बहाई शिक्षा के अंधविश्वासों से उनके धार्मिक विश्वास कमज़ोर होते हैं, और मनुष्य शंका में पड़ जाता है। इन्हीं शिक्षाओं के आधार पर हुसैन अली बहा एक दिन इमामे ज़माना(मैहदी मौऊद) बनता है। तो दूसरे दिन आखिरी नबी होने का दावा करता है। और साथ ही नए धर्म को प्रचलित करता है। कुछ दिनों के बाद खुदाई (अल्लाह) का भी दावेदार हो जाता है। उसकी इच्छा यह है कि मानव, धर्म के प्रति विश्वास समाप्त कर बैठे और समाज में यह प्रचलित हो जाए कि धर्म (मज़हब) बे-बुनियाद चीज़ है। जिस धर्म में अंध विश्वास भरा हो, अच्छा यह है कि ऐसे धर्म को छोड़कर बे धर्म रहा जाए।

एक ओर अंध विश्वास वर्णमालाओं का खेल है। जिससे तरह तरह की खुराफ़ात पैदा होते हैं। पढ़ी लिखी जनता इससे गुमराह होती है। और सीधे साधे लोग इस जाल में फंस जाते हैं।

बहाई किताबों में इस प्रकार की निरर्थक और प्रतिकूल बातें जब खुलकर सबके सामने आयीं तो उनके नेताओं ने सभी किताबों और लेखों को छुपा दिया। इसी कारण आज वह किताबें केवल बहाईयों के धर्मगुरुओं के पास मौजूद हैं। इतनी सुरक्षा और बचाव के बावजूद खोज करने वाले विध्वान, ईरानी संसद के पुस्तकालय और मिश्र, लन्दन पैरिस, मास्को, लाहौर के पुस्तकालयों में से थोड़ी बहुत किताबें और लेख प्राप्त कर ही लेते हैं।

बहाईयत ने आरम्भ से प्रतिकूलता का प्रचार इसलिए किया कि धार्मिक विश्वासों को कमजोर कर के कुछ नाम निहाद नारे अपनाने के साथ ही आपस में विरोध, दुश्मनी और एक दूसरे के धार्मिक विश्वासों में दखल आन्दाज़ी न करने का प्रचार शुरू कर दिया जाए। अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि यह गिरोह धार्मिक विश्वासों का विरोधी होने के साथ साथ न तो मानवता का ही आदर करता है और न ही उसने साम्राज्यवाद के विरुद्ध आवाज़ उठाई है।

मानवीय सभ्यता से युद्ध

यह पूर्ण रूप से कहा जा सकता है कि जहां भी साम्राज्यवाद का आगमन होता है। वहां से सभ्यता और एक दूसरे के प्रति आदर को निकाल फेंकता है। इससे गुलामी की रस्सियों में जकड़ी जनता में विरोध की क्षमता कमजोर हो जाती है। क्योंकि जिस जाति (क्रौम) में सभ्यता का बोलबाला होता और सच्चाई पाकदामनी, शराफत, गैरत जैसी भावनाएं पाई जाती हैं तो उसके लिए किसी दुष्ट, दुराचारी के सामने झुकना कठिन होता है। और कोई विस्तारवाद आसानी से उनको अपना गुलाम नहीं बना सकता।

समाज से अगर दुष्टता, दुराचार, शराब खोरी और बैगैरती फैलेगी तो उस समाज में सभ्य मनुष्य का जीना कठिन हो जाएगा। साम्राज्यवाद की गुलाम जातियों पर निगाह डालिए तो मालूम होगा कि दुनियाँ के कितने गरीब और बेसहारा लोग धन

दौलत और शक्ति के नीचे दबे हुए हैं। विस्तारवाद के कार्यो का पहला कार्य यह है कि वह समाज मे अय्याशियों के अड्डो, नाइटक्लबों, शराब खानो और दूसरी गंदी चीजों के सहारे असभ्यता और दुराचार का प्रचार व प्रचलन करता है। मस्जिदों और धार्मिक स्थलों को बन्द करने के साथ साथ लोगो को इन स्थानों तक जाने से रोकता है। शिक्षा में कभी सुचनाएं और समाचार पहुंचने पर प्रतिबन्ध लगाता है। जिससे जिहालत और असभ्यता लोगों के दिलों मे प्रवेश कर जाती है। अतः यही साम्राज्यवाद के विजयी होने का कारण है। पश्चिमी देशों मे गुंडागर्दी और असभ्यता को फैलाने मे बहाईयत आगे आगे है। वह मानवता के कुशल और सभ्य विचारों से युध्द कर रही है। नंगापन, बदमाशी और औरतों को साम्राज्यवादी आज़ादी का समर्थन करने को उक्सा (प्रोत्साहित कर) रही है।

उसका एलान है कि अगर पति पत्नि माता पिता नही बन पाए है तो वह दूसरे मर्द या औरत से सम्भोग द्धारा माता पिता बन सकते हैं।

उनके धर्म मे धात (मनी) का जबरदस्ती निकालना जायज़ है। और इसी तरह से असली, और खूनी रिशतों को समाप्त करके नामहरम, महरम बन गया है। अब केवल बाप अपनी बेटी से रिश्ता करने के अलावा सभी से अपनी इच्छाओं कि पूर्ति कर सकता है। उनके धर्म मे बलात्कार का जुर्माना 9 तोला है। यह जुर्माना ब्याही और कुंवारी औरत में कोई अन्तर नही रखता। इन सब को देखकर मालूम होता है कि अय्याशी और बलात्कारी को इस धर्म मे पूरी छूट दी गयी है।

जनता की सभ्य राजनीति से सामना

बहाई राजनितिक गुट, राजनीति मे खेलने के बावजूद अपने समर्थकों से कहता है और प्रोपेगंडा करता है कि बहाईयत के समर्थक राजनीति से दूर रहें। अब्बास आफन्दी का इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध वाक्य जो कि बहाईयो का नारा भी समझा जाता है।

“बहाई होने या न होने का आधार यह है कि जो व्यक्ति राजनीति मे दखल देता है। और अपनी औकात से बढ़ चढ़ कर बोलता है। तो इससे सिद्ध होता है कि वह बहाई नहीं है।” और यही व्यक्ति एक स्थान पर लिखता है। “जनता पर शासन करने वाले शासक का विरोध करने का किसी बहाई का अधिकार नहीं है। उनकी समस्याओं और कार्यों मे दखल अन्दाज़ी न करें उनको उनके कार्यों और शासन करने पर छोड़ कर उनके दिलों पर नज़र रखें।”

इन विचारों और विश्वासों का प्रोपेगण्डा करके वास्तव मे विस्तारवाद की सेवा और कार्य प्रणाली को बयान किया गया है। अपने निकटतम साथियों को राजनीतिक अड्डों से हटाकर उनके समाज को अपना गुलाम बनाया है। राजनीतिक नेताओं और सामराजवादी शासकों को तानाशाही करने के लिए पूरी छूट दी गई है। जनता को दुहरी राजनीति मे फँसाया। अतः इस अत्याचार को छुपाने के लिए

अपने राजनीतिक कार्य कलापों को गुप्त रखकर दूसरों के विचारों से पीछा छुड़ाया है। दीन और मज़हब के नाम पर विस्तारवाद की प्रसन्नता अर्जित की है।

दूसरे शब्दों में बहाईयों की राजनीति यह है कि शासनिक कार्यों में दखल न दिया जाए और शासन की सहायता करने को राजनीतिक कानून बनाया जाए।

(समाप्त)

1. इससे मुराद वह सभ्यता नहीं है जो आजकल अधिकतर मुस्लिमों के अन्तर्गत प्रचलित है। क्योंकि आज के युग का अधिकतर मुस्लिमान सामाजिक सभ्यता, इस्लामी शिक्षा, कौम परस्ती तथा पूर्व पश्चिम के विचारों का एक समूह है। जिसे इस्तेमार ने फेलाया है। इसलिए जिन विशेषताओं को हमने ब्यान किया है वह इस्लामी सभ्यता की मानवीय क्रान्तिकारी तथा वास्तविक विशेषताएं हैं।

प्राचीन काल से लेकर आज तक साम्राज्यवादियों को यह कोशिश रही है कि यह वास्तविक इस्लामी सभ्यता मुसलमनों के अन्दर जड़ न पकड़ने पाए

2. किताब “नुकततुल-काफ़” पेज न.99-107 लेखक मिर्ज़ा जानी का शानी प्रकाशन-ब्रेललाइज़न हालैण्ड 1910 ई.।

स्वयं अली मोहम्मद शीराज़ी अपनी किताब “अहसनुल कसस” सुरह युसफ की तफसीर में इस बात को मानता है। और मिर्ज़ा हुसैन अली ने भी अपनी किताब “इकान” में इस बात की तरफ इशारा किया है। पृष्ठ सं. 51, प्रकाशक मिश्र 1923 ई.

3. “तलखीसे-तारीखें-नाबील” पृष्ठ स. 63 लेखक मोहम्मद नबील ज़रन्दी, अर्बो से फारसी अनुवाद (अशराक़ खाबरी)

प्रकाशित तेहरान 1946 - अलक वाकेबुद दुरिया भाग-1, पृष्ठ सं.31, लेखक अब्दुल हुसैन आवारा, प्रकाशित मिश्र 1923

“कशफल गता” गन्जीनए-हुदुदे-अहकाम,” “नफहाते-मुश्कबार” “अय्यामें-तिसअह” , “रहीके-मखदुम” , “कामुसे-तौकीए-मनीअ” , “असरारुल-आसार खुसुसी” , “जहुरुल हक” , “नजरे इजमीली-बे-दयानते बहाई” , “दरसे-नहुम इखलाक” इन सभी किताबों को स्वयं बहाईयों ने प्रकाशित किया है।

4. “हशत-बहिशत” पृष्ठ ए.276 मिर्जा अहमद रुही, और आगाखान किरमानी (लेखक) प्रकाशित तेहरान, “तलखीसे-तारीखे-नबील ज़रन्दी” पृष्ठ सं.66, “रौज़ तुस्सफा नासिरी” पृष्ठ सं.31 भाग 1. लेखक मिर्जा रज़ा कुली खां हिदायत, प्रका. तेहरान।

5. अलकोकबे दुरिया भाग-1,पृष्ठ सं. 34 मिश्र

6. अली मोहम्मद शीराज़ी ने अपनी किताब “तफसीरे-युसुफ” में अपने दोवों को लिखित रूप में प्रकाशित किया। “तफसीरे-सुरह-बकर” , “रिसाला बैनुल हरमैन” , “मतालेउल अनवार” , “रहीके मखतुम” , “जहुरुल हक” , में भी यह बात बयान की गयी है।

7-8. “नुकतुल काफ” पृष्ठ सं.151, व 212 लेखक अली मोहम्मद शीराज़ी मकातीब पृष्ठ सं.266, भाग-2 लेखक अब्बस आफन्दी, मिश्र “मफावेज़ात” पृष्ठ सं.124 लेखक अब्बास आफन्दी हालैण्ड 1908.

9. “लोहे-हैकलुद्दीन” पृष्ठ सं.5 लेखक अली मोहम्मद शीराज़ी “बदीअ” लेखक मिर्जा हुसैन, “तारिखे-सदरुस्सदुर” पृष्ठ सं. 207

10. “तलखीसे तारीखे नबील ज़रन्दी” पृष्ठ सं.138, “रौज़तुस्सफा नासिरी” पृष्ठ सं.311, भाग 10, इनशेआब दर बहाईयत पृष्ठ सं.70 लेखक इसमाईल राईन, प्रकाशित तेहरान 1978.

11. “मकाला शख्सी सय्याह” पृष्ठ सं.22 अब्बास आफन्दी, तेहरान 1962 “नुकततुल काफ” पृष्ठ सं.133, “कश्फल गता” पृ सं.202-204 “कर्ने-बदी” भाग1 पृष्ठ सं.423 लेखक शौकी आफन्दी “रौज़तुस्सफा नासिरी” पृ.सं. 423 भाग-10 “नासिखुततवारीख” पृष्ठ 13. भाग 3, लेखक मिर्ज़ा मोहम्मद तकी तेहरान-

12. “कश्फुलगता” पृष्ठ सं.204, “इनशआब दर बहाईयत” पृष्ठ सं.74, “रौज़तुस्सफा नासिरी” , “नासिखुततवारीख” , “तलखीसे तारीखे नबील” , “अलकवाकेबुद्रुरिया” , “मकालाए शख्सी सय्याह” इत्यादि में भी जिन पृष्ठों पर तबरेज़ में बाब के तोबा नामे का वर्णन किया गया है वहीं पर इन बातों की तरफ भी इशारा किया गया है और इसी प्रकार एडवर्ड ब्राउन ने “मवाद तहकीक दरबारहे मज़हबे बाब” में पृष्ठ सं. 54 पर इस बात की ओर इशारा किया गया है।

13. पिछला हवाला

14. “तारीखे- रिजाले-ईरान” भाग-4 पृष्ठ सं.162 लेखक मौहदी बामदाद प्रकाशित तेहरान। “तलखीसे तारीख नैबील ज़रन्दी” , पृष्ठ सं.196 इसी प्रकार मोहम्मद अली शीराज़ी के जीवन परिचय से सम्बन्धित सभी हवालों में असफहान के शासक की ओर से समर्थन का वर्णन किया गया है।

15. नमुने के तौर पर उस समय के रूसी राजदुत की रिपोर्ट देते हुए लिखते हैं “बहुत अच्छी बात है कि बाबियों ने इस्लाम के धार्मिक नेताओं के विरुध विरोध प्रकट किया है” । “शोरिश-बाबियान दर ईरान” भाग 30 पृष्ठ सं.143-159 प्रकाशक रूसी कल्चरल सेन्टर मास्को।

“नकतुल काफ़” के लेखक ने पृष्ठ सं.266 पर विदेशी राजदुतों की ओर से अली मोहम्मद शीराज़ी को समर्थन देने का वर्णन है।

साम्राज्यवादी शक्तियों की ओर से बाबियों को समर्थन यह स्वयं एक पुर्ण परिच्छेद है (फ़स्ल) जिसको हमें प्रिन्स वाल्गोर की रिपोर्ट “इनशआबदर बहाईयत” में वर्णित किया है।

16. “नुक़ततुल-काफ” पृष्ठ सं.233

17. बाबियो के आपात काल से सम्बन्धित सभी किताबों और इतिहास में इस उपद्रव के बयान किया गया है।

18. “इनशेआब दर बहाईयत” पृष्ठ सं.38, ईरान में ब्रिटिश राजदुत द्धारा अपने विदेश मंत्रालय को भेजी गयी रिपोर्ट का अनुवाद। ब्रिटिश के सरकारी रिकार्ड आफिस से हवाला-

19. “कर्न-बदीअ” , भाग-1 पृष्ठ सं. 338, भाग 2, पृष्ठ सं.41 “इनशेआब दर बहाईयत” पृष्ठ सं.106, तलखीसे-तारीखे नबील ज़रन्दी पृष्ठ सं.627, “बहाउल्ला व असरेजदीद” पृष्ठ सं.44 लेखक डाक्टर असलमन्त, प्रकाश-अमाफरत हीफा इसराईल 1932 “रेसाला-अय्यामे तिसआ” पृष्ठ सं.387, “इशराकात” पृष्ठ सं.353 लेखक मिर्ज़ा हुसैन अली। “अलकवाकेबुद दुर्रिया” पृष्ठ सं.234

20. पिछला हवाला मिर्ज़ा हुसैन अली की गिरफ्तारी और दुसरे वर्णन.

21. मसाबीहे-हिदायत भाग-2 पृष्ठ सं.282 लेखक अज़ीजुल्लाह सुलेमानी प्रकाशक, लुजनए मिल्ली प्रकाशन तेहरान.

इस तरह सरकारी किताबों और प्रकाशनों मे भी इश्क़बाद रुस मे बहाईयों के धार्मिक स्थलों का ब्यान किया गया है।

22. मिर्ज़ा हुसैन अली की किताब “मुबीन” मे लौह का मतन पृष्ठ सं.76 पर मौजूद है। और किताब “कर्न बदीअ” भागा-2 पृष्ठ सं. 86 पर इस तरह का वर्णन है।

23. “इनशेआब दर बहाईयत” पृष्ठ सं.83, माएदह-हाए-आसमानी पृष्ठ सं.130 प्रकाशन मोस्सा मिल्ली प्रकाशन आमरी तेहरान

कर्नबदीअ भाग-2 पृष्ठ सं.171

24. “मवादे-तहकीक दरबारए मज़हबे बाब” , “हज़रत बहाउल्लाह” पृष्ठ सं.148 लेखक मोहम्मद अली फैज़ी प्रकाशन तेहरान “मकातीब” भाग-2 पृष्ठ सं.177

25. कर्ने बदीअ भाग-2 पृष्ठ सं.270,271,275, “अलकवाके बुददुरियां” भाग-9 पृष्ठ सं.379,381,383, “इन्शेआबदर बहाईयत” पृष्ठ सं.84, “नुक़ततुल काफ़” और दुसरे हवालों मे इस बात का वर्णन है।

26. “मक़ाला-शख़सी सय्याह” पृष्ठ सं.78, “ईकान” लेखक मिर्ज़ा हुसैन अली, “मुफ़ावज़ात” , “अल्फ़राएद” लेखक मिर्ज़ा अबुलफज़ल गुलपैगानी और तहकीक दर तारीख व फलस्फ़ा बाबीगिरी और बहाईगरी भाग-3 मे बहाई हवालों की बहस हुई है।

27. मिर्ज़ा हुसैन अली ने अपनी किताब “मुबीन” के 21, 48, 56, 210, 232, 286, 308, 342, 405, 417 पृष्ठों पर खुलेआम उलुहीयत का दावा किया है। और माएदह हाए आसमानी, “रेसाला अय्यामे तिसआ” “अदइयए हजरते महबुब” , “मजमुए मुबारका” मसाबीहे हिदायत जैसी किताबे मिर्ज़ा हुसैन अली के इस प्रकार के दावों से भरी पड़ी है। इस प्रकार “मकातीब” के पृष्ठ सं.225 पर अब्बास आफ़न्दी ने मिर्ज़ा हुसैन अली के इस दावे को स्वीकार किया है।

28. “कर्नेबदीअ” बहाईयत के इतिहास से सम्बन्धित बलानफील्ड की किताब देखिए-जिसमे यह किस्सा हुसैन अली की पुत्री के द्दारा नकल हुआ है।

29. “मजमुआ अल्वाह मुबारक” पृष्ठ सं.159 पर स्वयं मिर्ज़ा हुसैन अली ने रुसी सरकार से धन लेने को खुले शब्दों मे स्वीकारा है।

30. “किताबे मुबीन” मे पृष्ठ सं.159 पर नसिरुद्दीन शाह काचार के समक्ष मिर्ज़ा हुसैन अली द्दारा सहायता मांगने का पुरा वर्णन किया गया है।

31. “खातराते-सुबही” पृष्ठ सं.98 लेखक सुबही मेहतदी (मिर्ज़ा हुसैन अली के पर्सनल सिक्रेटरी)

“अब्बास आफ़न्दी के खुतुत” मकातीब भाग-3 पृष्ठ सं.327 “कर्नेबदाअ” भाग-3 पृष्ठ सं.218,326 और अब्बास आफ़न्दी से सम्बन्धित और दुसरी किताबें-

32. “मकातीब भाग-2” पृष्ठ सं.312, भाग-4 पृष्ठ सं.177, भाग-3 पृष्ठ सं.157 पर उस्मानी सरकार के समर्थन मे पत्र लिखित है। “इन्शेआब दर बहाईयत” पृष्ठ सं.12। पिछला हवाला।

33. “कर्नेबदाअ” भाग-2, पृष्ठ सं.125, भाग-3 पृष्ठ सं.291 “इन्शेआब दर बहाईयत” पृष्ठ सं.127

34. “बयानुल हकाएक” पृष्ठ सं.71 लेखक अब्दुल हुसैन आयती, “कर्नेबदाअ” भाग-3 पृष्ठ सं.297, इनशेआब दर बहाईयत पृष्ठ सं.121 पिछला हवाला

35. पिछला हवाला

36. “अल्कवाकेबुद दुरियां” भाग-2 पृष्ठ सं.305, “कर्नेबदीअ” भाग-3 पृष्ठ सं.299, “इनशेआब दर बहाईयत” पृष्ठ सं.118

37. तख्ती (लौह) “मकातीब” मे वर्णित है। और “इनशेआब दर बहाईयत” पृष्ठ सं.119, 120, “मकातीब” भाग-3 मे भी इसका वर्णन किया गया है। यहां तक कि अब्दुल बहा ने एक तकरीर के दौरान अंग्रेज़ो को मुखातिब कर के कहा “ईरानी जनता अंग्रेज़ो की जान निसार है” । देखिए किताब अब्दुल बहा के खुत्बे भाग-1 पृष्ठ सं.33

38. “कर्ने बदीअ” भाग-3 पृष्ठ सं.32। “रिसाला अय्याम तिसआ” पृष्ठ सं.508, “अलकवाकबुद-दुरियां” भाग-2 पृष्ठ सं.307 “मजल्ला अखबारे आमारी” पृष्ठ सं.7 अनुवादक महफिले मिल्ली बहाईयाने-ईरान सं.7-8 नवम्बर, दिसम्बर 1945.

39. “कश्फुल-हील” पृष्ठ सं.154, लेखक अब्दुत हुसैन आयती प्रकाशन-तेहरान “प्यामे-पेदर” पृष्ठ सं.142 लेखक सुबही मुहतदी (अब्बसी आफ़न्दी के पर्सनल सिक्रेटरी)

40. “शर्हेहाल हज़रत वली अमरुल्लाह” पृष्ठ सं.38, लेखक अब्दुल हमीद इशराक़ खावरी-

41. पिछला हवाला-
42. शौकीं रब्बानी का टेलीग्राम मजल्ला अखबार आमरी से लिया गया। (4 जुलाई 1950, व 1951)
43. इनशेआब दर बहाईयत पृष्ठ सं.195-203
44. पिछला हवाला पृष्ठ सं.217-327
45. देखिए (बहाई न्यज़) सितम्बर 1947 और मजल्ला अखबार आमरी 7 नवम्बर 1947
46. “तौकीआते मुबारक हज़रत वली अमरुल्लाह” पृष्ठ सं.290 प्रकाशन अल मोस्साते आमरी तेहरान।
47. मजल्ला अखबार आमरी (अगस्त 1953 ई.)
48. अखबार “अलअहराम” काहिरा 23 फरवरी 1975 और इरान रेडियो, टीवी. द्वारा प्रसारित न्युजबुलेटिन संख्या 232, 11 जनवरी 1975 ई. मध्य-पूर्व एशिया के रेडियों और अखबार ले नक़ल-अखबार “अलमहबर” 25 फरवरी और मजल्ला “अखबार वी.टी.” 10 अप्रैल 1975 पृष्ठ सं. 30 और समाचार पत्र “अलअहराम” 10 अप्रैल 1975 दोबारा-“इनशआब” दर बहाईयत पृष्ठ 257,299
49. “खुतबाते-अब्दुल बहा” भाग-1 अमरीका की यात्रा के दौराने मिस क्रापर के मकान पर एक तकरीर 1911 ई. और वह किताबें जो कि अमरीका मे बसे बहाईयों ने प्रकाशित की हैं।
सुचना प्रसारण एजेन्सी -इस्लामी गणराज्य ईरान
50. “तफसीर” सुरह - युसुफ (खिताबे-कुरतुल ऐन), “ब्यान” दसवाँ भाग-और तहकीक दर तारीख फलसफा बाबीगिरी और बहीईगरी-
51. “ब्यान” बाब 15 खण्ड 4,6
52. “ब्यान” दसवां बाब खण्ड 8

53. “अक़दस” पृष्ठ सं.38 लेखक मिर्ज़ा हुसैन अली बहा

54. “अक़दस” पृष्ठ सं.19

55. अख़बार अमारी से लिया गया। (30 दिसम्बर 1945)

56. “अक़दस” पृष्ठ सं.225

राजनीति से दूर होने के बयान में और जानकारी के लिए देखिए अख़बार आमरी (12 मार्च 1947) और 4 अप्रैल 1946, 11 फरवरी 1946, 5 मई 1946 और किताब “नज़र इजमाली दर दयानते बहाई” लेखक अहमद यज़दानी आमरी प्रकाशन तेहरान 1950 ई.

“रिसालए सियासिया” लेखक अब्बास आफन्दी ईरान की संसद के पुस्तकालय में “रिसालय बहाईयां” के नाम से मौजूद है।

[[अलहम्दो लिल्लाह किताब (बहाईयत साम्राज्यवाद की सेवक संस्था) पूरी टाईप हो गई खुदा वंदे आलम से दुआगौ हूं कि हमारे इस अमल को कुबुल फरमाए और इमाम हुसैन (अ.) फाउनडेशन को तरक्की इनायत फरमाए कि जिन्होंने इस किताब को अपनी साइट (अलहसनैन इस्लामी नेटवर्क) के लिए टाईप कराया। 20.6.2017

विषयसूची

दो शब्द.....	3
प्रस्तावना.....	5
बहाईयत का संक्षिप्त इतिहास.....	9
इंगलैण्ड की ओर से सेवा की स्वीकृति	16
साम्राज्यवादी शक्तियों से बहाईयों का सम्बन्ध.....	18
बहाईयत ओर उसमानी शासक.....	18
बहाईयत और ब्रिटिश सरकार.....	19
बहाईयत और यहूदी आन्दोलन.....	20
ईरान में बहाईयत और यहूदी आन्दोलन इस्लामी आन्दोलन क्रान्ति से पूर्व	22
बहाईयत और अमरीका.....	24
धर्म के प्रति विश्वासों को समाप्त कर नए विश्वासों को प्रचलित करना.....	26
मानवीय सभ्यता से युद्ध.....	29
जनता की सभ्य राजनीति से सामना.....	31